

दुनिया जानती है कि अल्लाह के नबी हजरत मुहम्मद (सल्ल०) इन्सानियत के उस सर्वश्रेष्ठ गरोह से सम्बन्ध रखते हैं जो आरम्भ से मानव जाति को खुदा परस्ती और सदाचरण की शिक्षा देने के लिए उठता रहा है। एक खुदा की बन्दगी और पवित्र आचरण की शिक्षा जो हमेशा दुनिया के सच्चे पैगम्बर, ऋषि और मुनि देते रहे हैं, वही हजरत मुहम्मद ने भी दी है। उन्होंने किसी नये खुदा की कल्पना पेश नहीं की और न किसी निराले आचरण की शिक्षा ही दी है, जो उनसे पहले के पथ-प्रदर्शकों की शिक्षा से भिन्न हो। फिर सवाल यह है कि उनका वह अस्ती कारनाम क्या है जिस की वजह से हम उन्हें मानव-इतिहास का सब से बड़ा आदमी मानते हैं।

इस सवाल का संक्षिप्त जवाब यह है कि बेशक हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से पहले इन्सान इस बात से परिचित था कि खुदा है और उस की खुदाई में कोई दूसरा शरीक नहीं है लेकिन इस बात से पूरी तरह परिचित न था कि इस दार्शनिक वास्तविकता का मानव नैतिकता से क्या सम्बन्ध है। इस में शक नहीं कि इन्सान को नैतिकता के बेहतरीन सिद्धान्तों की जानकारी थी, मगर उसे स्पष्ट रूप से यह पता न था कि जीवन के विभिन्न विभागों और पहलुओं में, इन नैतिक सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप किस तरह दिया जाना चाहिए। खुदा पर ईमान, नैतिक सिद्धान्त और व्यावहारिक जीवन ये तीन अलग-अलग चीजें थीं। जिनके बीच कोई तार्किक-सम्बन्ध, कोई गहरा तालुक और कोई परिणामजनक रिश्ता मौजूद न था। यह सिर्फ हजरत मुहम्मद (सल्ल०) हैं, जिन्होंने इन तीनों को मिलाकर एक लड़ी में पिरो दिया और उनके मेल से एक पूर्ण संस्कृति और सभ्यता का नक्शा केवल कल्पना-जगत ही में नहीं, बल्कि व्यवहार की दुनिया में भी स्थापित करके दिखा दिया।

उन्होंने बताया कि खुदा पर ईमान केवल एक दार्शनिक सत्य के मान लेने का नाम नहीं हैं, बल्कि इस ईमान का स्वभाव अपनी असल प्राकृति ही के अनुसार एक विशेष प्रकार का अखलाक और नैतिकता की मांग करता है और इस नैतिकता का प्रदर्शन इन्सान के व्यावहारिक जीवन की सम्पूर्ण नीति में होना चाहिए। ईमान एक बीज के समान है जो इन्सान के दिल में जड़ पकड़ते ही अपनी प्राकृति के अनुरूप व्यावहारिक जीवन रूपी एक पूरे वृक्ष की रचना शुरू कर देता है। और वृक्ष के तने से लेकर उस की शाखाओं और पत्ती-पत्ती तक में नैतिकता का वह जीवन-रस जारी हो जाता है, जिस के स्रोत बीज के रेशों से उबलते हैं। जिस तरह यह सम्भव नहीं है कि जमीन में बोयी तो जाये आम की गुठली और उससे निकल आये नीबू का पेड़। इसी तरह यह भी सम्भव नहीं है कि दिल में बोया तो गया हो खुदा परस्ती और ईश्वरवाद का बीज और उससे पैदा हो जाये एक भौतिक वादी जीवन, जिस की नस-नस में बद अखलाक़ी और अनैतिकता की रूह फैली हुई हो। ईश्वरवाद से पैदा होने वाले अखलाक़ और अनेकेश्वरवाद, नास्तिकता या भौतिक वाद से पैदा होने वाला अखलाक़ बराबर नहीं ले सकते। जीवन के ये सारे दृष्टिकोण अपना अलग-अलग स्वभाव रखते हैं और हर एक का स्वभाव दूसरे से भिन्न नैतिकता की अपेक्षा करता है। फिर जो अखलाक़ ईश्वरवाद से जन्म लेते हैं वे सिर्फ एक खास आबिद-जाहिद और तपस्वी एवं जप तप करने वाले गिरोह के लिए खास नहीं हैं कि केवल खानकाह और मठों की चारदीवारी और एकान्त ही में उन का प्रदर्शन हो सके। उन को व्यापक रूप में पूरी इन्सानी जिन्दगी पर और उसके हर-हर पहलू पर चरितार्थ होना चाहिए। एक व्यापारी ईश्वरवादी है तो कोई कारण नहीं कि उस के कारोबार में उस की ईश्वरवादी नीति सामने न आये। अगर एक जज ईश्वरवादी है तो अदालत की कुर्सी पर, और एक पुलिस मैन ईश्वरवादी है तो पुलिस पोस्ट पर उससे ईश्वरवादी नीति के विरुद्ध किसी चीज के ज़ाहिर होने की आशा नहीं की जा सकती। और इसी तरह अगर कोई कौम या समुदाय ईश्वरवादी है तो उसके नागरिक जीवन में, उसकी देश व्यवस्था में, उस की विदेश राजनीति में और उस के युद्ध और सन्धि में ईश्वर वादी नीतियों और आचरण का प्रदर्शन होना चाहिए। वरना उसका ईश्वर को मानना निरर्थक होगा। अब रही यह बात कि ईश्वरवाद किस प्रकार के अखलाक़ की अपेक्षा करता है और ऐसे अखलाक़ का प्रदर्शन किस तरह इन्सान के व्यावहारिक जीवन में और उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक नीति में होना चाहिए तो इसे ब्यान करने के लिए बड़ा समय चाहिए इसे एक छोटी सी पुस्तिका में समेटना बड़ा मुश्किल है। परन्तु में नमूने के तौर पर नबी (सल्ल०) के कुछ कथन आपको सुनाऊंगा, जिनसे आप को अंदाजा होगा कि हजरत मुहम्मद की पेश की हुई जीवन व्यवस्था में ईमान, अखलाक़ और अमल को किस प्रकार एक दूसरे में समोया गया है। सुनिए हुजूर क्या

फरमाते हैं।

“ईमान की बहुत सी शाखाएँ हैं। उसकी उच्च शाखा यह है कि तुम खुदा के सिवा किसी की उपासना न करो। और उसकी निम्न शाखा यह है कि रास्ते में अगर तुम कोई ऐसी चीज़ देखो, जो जनता को कष्ट देने वाली हो, तो उसे हटा दो और लज्जा भी ईमान ही की एक शाखा है।” (बुखारी, मुस्लिम)

“जिस्म और लिबास का पाक साफ रखना आधा ईमान है।” (मुस्लिम)

“ईमान वाला वह है, जिस से लोगों को अपनी जान और माल का कोई खतरा न हो।” (तिर्मिजी, नसई)

“उस व्यक्ति में ईमान नहीं, जिस में अमानतदारी नहीं, और उस का कोई दीन धर्म नहीं, जो वायदे और अहद का पाबन्द नहीं।” (अलबैक्री फी शौबिल ईमान)

“जब नेकी करके तुझे खुशी हो और बुराई करके तुझे पछतावा हो तो तू ईमान वाला है।” (अहमद)

“ईमान संयम सहनशीलता और उदार हृदयता का नाम है।” (अहमद)

“बेहतरीन ईमानी हालत यह है कि तेरी दोस्ती और दुश्मनी खुदा के वास्ते हो। तेरी जुबान पर खुदा का नाम जारी हो और तू दूसरों के लिए वही कुछ पसन्द करे, जो अपने लिए पसन्द करता है और उनके लिए वही कुछ नापसन्द करे, जो अपने लिए नापसन्द करता है।” (अहमद)

“ईमान वालों में अपने ईमान के लिहाज से सब से ज्यादा मुकम्मल ईमान उस व्यक्ति का है जो उनमें शील स्वभाव और आचरण के लिहाज से सबसे अच्छा हो, और जो अपने घर वालों पर सब से ज्यादा मेहरबान हो।” (तिर्मिजी)

“जो व्यक्ति खुदा और आखिरत पर ईमान रखता हो, उसे अपने मेहमान की इज्जत करनी चाहिए, अपने पड़ोसी को तकलीफ नहीं देनी चाहिए। और जब बोले तो भली बात बोले, वरना चुप रहे।” (बुखारी, मुस्लिम)

“मोमिन कभी ताने देने वाला, लानत-मलामत करने वाला, गन्दी बातें करने वाला और जुबान दराजी करने वाला नहीं हुआ करता।” (तिर्मिजी)

“मोमिन सब कुछ हो सकता है, मगर झुठा और खयानत करने वाला नहीं हो सकता।” (अहमद)

“खुदा की क्रसम वह मोमिन नहीं है जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी चैन से न रहे।” (बुखारी, मुस्लिम)

“जो व्यक्ति खुद पेट भर खाये और उसके पड़ोस में इसका पड़ोसी भूखा रह जायये, वह ईमान नहीं रखता।”

(अल बैहकी फी शौबिल ईमान)

“जो व्यक्ति अपना गुस्सा निकाल लेने की ताकत रखता हो और फिर गुस्सा, पी जाये, उसके दिल को खुदा शान्ति और ईमान से भर देता है।” (अबू दाऊद)

“जो व्यक्ति किसी ज़ालिम और आत्याचारी को ज़ालिम जानते हुए उस का साथ दे, वह इस्लाम से निकल गया।” (अल बैहकी फी शौबिल ईमान)

“जिसने लोगों को दिखाने के लिए नमाज़ पढ़ी, या रोज़ा रखा या दान (खैरात) दिया उसने खुदा के साथ लोगों को शरीक किया।” (अहमद)

“खालिस मुनाफ़िक (कपटाचारी) है वह व्यक्ति जो अमानत में खयानत करे, बोले तो झुठ बोले, वचन दे तो उसे भंग कर दे, और लड़े-झगड़े तो शराफ़त की हद से गुज़र जाये।” (बुखारी, मुस्लिम)

“झुठी गवाही देना इतना बड़ा गुनाह है कि शिर्क के करीब पहुँच जाता है। असली मुजाहिद वह है, जो खुदा की फरमाबरदारी में खुद अपने आप से लड़े और असली मुहाजिर वह है जो उन कामों को छोड़े जिन्हें खुदा नापसन्द करता है।” (अल बैहकी फी शौबिल ईमान)

“क़ियामत के दिन खुदा के साये में सबसे पहले जगह पाने वाले वे लोग होंगे, जिनका हाल यह रहा कि जब बी हक उनके सामने पेश किया गया तो उन्होंने मान लिया। और जब भी हक उनसे मांगा गया तो उन्होंने खुले दिल से दिया और दूसरों के मामले में उन्होंने वह फैसला किया जो वे खुद अपने मामले में जानते थे।” (अहमद)

“तुम छःबातों की गारन्टी दो, मैं तुम्हारे लिए जन्नत की गारन्टी देता हूँ - बोलो तो सच बोलो। वचन दो तो पूरा करो। अमानत में खरे उतरो। बदकारी से बचो। बुरी नज़र से न देखो और जुल्म से हाथ रोक लो।”

(अहमद, बैहकी फी शोबिल ईमान)

“धोखेबाज़ और कंजूस और एहसान जताने वाला आदमी जन्नत में नहीं जा सकता।” (तिर्मिज़ी)

“जो शरीर हराम की कमाई से पला हो, उसके लिए तो दोज़ख की आग ही ज्यादा मुनासिब है। वह जन्नत में नहीं जा सकता।”

“जिस व्यक्ति ने ऐबदार चीज़ बेची और खरीदार को उसके ऐब से बाखबर नहीं किया, उस पर खुदा का गुस्सा भड़कता रहता है और फरिश्ते उस पर लानत भेजते रहते हैं।” (इब्ने माजा)

“कोई व्यक्ति चाहे कितनी ही बार ज़िन्दगी पाये और खुदा की राह में जिहाद करके जान देता रहे, मगर वह जन्नत में नहीं जा सकता, अगर उसने किसी का कर्ज़ अदा न किया हो।”

“मर्द या औरत साठ साल खुदा की इबादत करते हैं और मरते समय एक वसीयत में हक़दार का हक़ मार कर अपने आप को दोज़ख का अधिकारी बना लेते हैं।” (अहमद, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, इब्ने माजा)

“वह व्यक्ति जन्नत में दाखिल न होगा, जो अपने अधीनों पर बुरी तरह अफ़सरी करे।”

“मैं तुम्हें बताऊँ कि रोज़े और ख़ैरात और नामज़ से भी अफ़ज़ल और बेहतर क्या चीज़ है? वह है बिगाड़ सै सूलह कराना और लोगों के आपसी सम्बन्धों में बिगाड़ पैदा करना ऐसी बुरी हरकत है जो तमाम नेकियों पर पानी फेर देती है।” (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

“असल मुफ़लिस और दरिद्र वह है, जो कियामत के दिन खुदा के सामने इस हाल में हाज़िर हो कि उसके साथ नामाज़, रोज़े, जकात थे। मगर वह किसी को गाली देकर आया था, किसी पर तोहमत लगा कर आया था, किसी का माल माल कर खाया था, किसी का खून बहाया था और किसी को पीट कर आया था। फिर खुदा ने उस की एक-एक नेकी उन मज़लूमों पर बांट दी और उन मज़लूमों का एक-एक कुसूर उसके हिसाब में डाल दिया और उसके पास कुछ न रहा जो उसे दोज़ख से बचाये।” (मुस्लिम)

“लोग निजात और मोक्ष से वंचित न हों अगर अपनी बुराइयों की तावीलें और बहाने कर करके अपने मन को इत्मीनान न दिलाये।” (अबू दाऊद)

“जो व्यापारी भाव चढ़ाने के लिए माल रोक रखे, उस पर लानत और फिटकार है। (इब्ने माजा दारमी)

“जिसने चालीस दिन ग़ल्ला (अनाज) इस लिए रोक रखा है कि भाव चढ़ जायें तो खुदा का उस से और उसका खुदा से कोई तालुक नहीं। फिर अगर वह उस अनाज को ख़ैरात भी कर दे तो माफ़ नहीं किया जायेगा।”

ये अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथनों में से कुछ कथन हैं जो मैंने केवल नमूने के तौर पर आप के सामने पेश किये हैं। इन से आप को अन्दाज़ा होगा कि नबी (सल्ल०) ने ईमान से अख़्लाक और आचरण का और फिर अख़्लाक से ज़िन्दगी के तमाम विभागों का संबंध किस प्रकार स्थापित किया है। इतिहास का अध्ययन करने वाले जानते हैं कि आप (सल्ल०) ने इस चीज़ को सिर्फ़ बातों की हद तक न रखा, बल्कि अमल की दुनिया में एक पूरे देश की राजनैतिक व्यवस्था और संस्कृति को इन्हीं बुनियादों पर कायम करके दिखाया। और आप (सल्ल०) का यही वह कारनामा है, जिस की वजह से आप मानव जाति के सब से बड़े रहनुमा और पथ प्रदर्शक हैं।